—लवकुश, छठी, अपना घर, कानपुर, उ.प्र.

—महेन्द्र लोधी, पाँचवीं, धजरई, टीकमगढ़, म. प्र.

पान ने बनाया सबसे बड़ा डॉन

एक था पान का पत्ता
दिखने में लगता जैसे लत्ता
सब खाते इसको कलकत्ते में
अधिक दबाते इसको मुँह में

सब का मुँह करता लाल
तब तक आई मेरे फोन में एक कॉल
हमने उठाया फोन बोला कौन
उसने बोला मैं हूँ मुम्बई का डॉन

फिर मैंने बोला अरे चुपकर हो जा मौन
मैं हूँ भारत का सबसे बड़ा डॉन

—चंदन कुमार, चौथी, अपना घर, कानपुर, उ. प्र.

मेरा पन्ना

चूहों की कहानी

एक गोदाम रहता है। वहाँ बहुत सारे चूहे रहते थे। वह गोदाम पटाखे का था। उन चूहों ने सोचा कि हम भी दीवाली मनाएँगे। वे एक-एक पटाखे ले जाकर अपने बिल में रखने लगे। फिर दीवाली आ गई। उन्होंने पटाखे जलाने की तैयारी की मगर उनके पास माचिस नहीं थी। उन्होंने माचिस चोर के लाई। और फिर उन्होंने पटाखे जलाए और बिल में माचिस जला के डाल दी। और पटाखे फूटने लगे। और उन पटाखों के साथ-साथ सारे चूहे भी जल गए।

—दिव्या वर्मा, सातवीं, टिकारी, बैतूल, म. प्र.

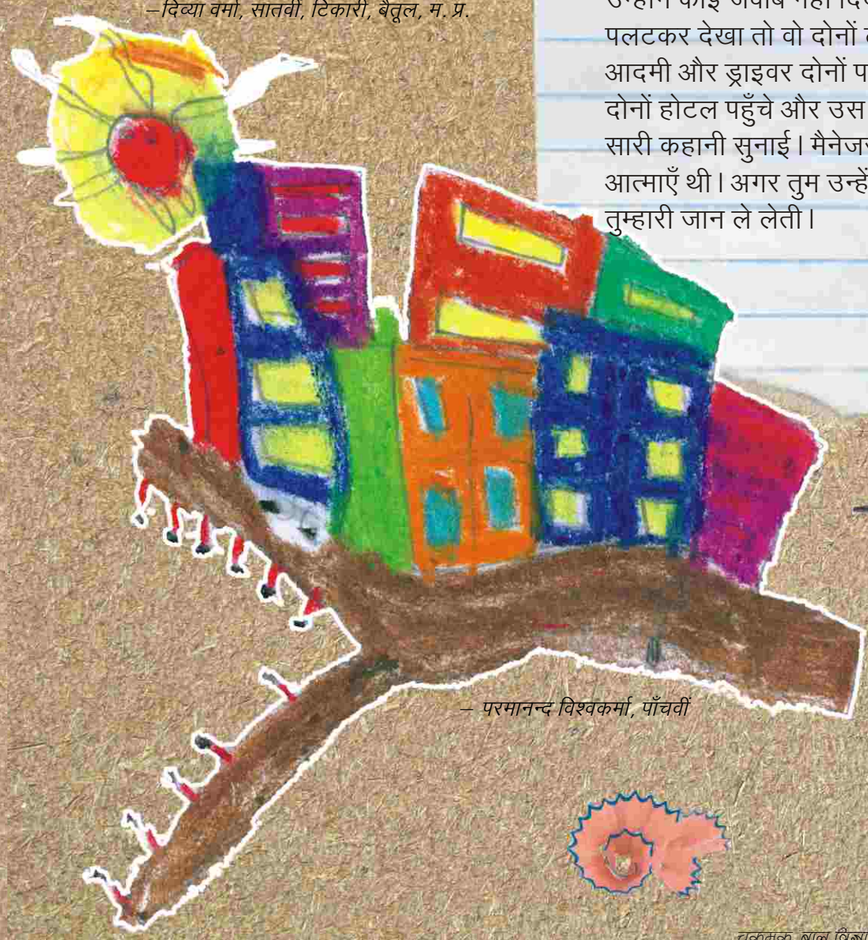

मेरा पन्ना

लाल कपड़ों वाली आत्मा

बहुत, बहुत पहले एक आदमी रात में अपनी कार से भोपाल जा रहा था। सफर के दौरान उसने व उसके ड्राइवर ने लाल कपड़ों वाले दो आदमियों को देखा। उन्होंने उनसे पूछा कि उनको कहाँ जाना है? वो लोग बोले - हमें बस सीधे ही जाना है और कार में बैठ गए। एक घण्टा बीत गया। तब उसने उनसे पूछा कि उन्हें कहाँ जाना है? उन दोनों ने कोई जवाब नहीं दिया। उस आदमी ने फिर से पूछा। फिर भी उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर उसने पीछे पलटकर देखा तो वो दोनों लोग गायब हो गए थे। वो आदमी और ड्राइवर दोनों पसीने-पसीने हो गए। वो दोनों होटल पहुँचे और उस आदमी ने मैनेजर को सारी कहानी सुनाई। मैनेजर ने कहा कि वो दोनों आत्माएँ थी। अगर तुम उन्हें लिफ्ट नहीं देते तो वो तुम्हारी जान ले लेती।

—सिद्धि, चौथी, उज्जैन, म. प्र.

— परमानन्द विश्वकर्मा, पाँचवीं

यही सोचता ....

यही सोचता मेरे घर पर
आया काला कागा
और गुसलखाने से मेरा
साबुन लेकर भागा

प्रस्तुति — राजबहादुर राजपूत, पाँचवीं, धजरई, टीकमगढ़, म.प्र.

मैं और मेरा जूता

एक बार की बात है मैं स्कूल में खेल रहा था। तभी मैंने एक और बच्चे को खेलते देखा। वो अपने जूते को ढीला करके पैर से उछाल रहा था। उसे देखकर मैंने भी अपने जूते के फीते खोले और उसे उछालने लगा। एक बार वो इतना ऊँचा उछल गया कि वो छज्जे पर चला गया। मैं चुपचाप एक जूता पहनकर घर आ गया। घर पर मम्मी ने डाँटा भी और हँसी भी। मेरे ऑटो में सब बच्चे मुझसे पूछ रहे थे कि मेरा एक जूता कहाँ गया? उसकी वज़ह से मैं कल स्कूल भी नहीं जा पाया। फिर मैं दूसरे दिन शाम को स्कूल गया। तब हिन्दी माध्यम का स्कूल चल रहा था। मेरे पापा ने चौकीदारजी को बताया कि मेरा एक जूता छज्जे पर चला गया है। तो मेरे पापा उस सीढ़ी पर चढ़े और डण्डे को जूते में फँसाकर नीचे ले आए।

–कार्तिक तिवारी, तीसरी, इन्दौर, म. प्र.

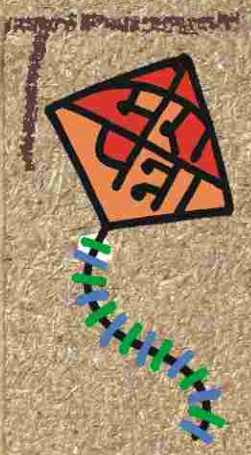

हमारी गाय जनी

आज सुबह चार बजे से ही मम्मी का यहाँ से वहाँ आना-जाना और कुछ खटर-पटर करना लगा था। मेरी नींद तो खुल ही गई थी। पर मैं आलसी जो ठहरी, रजाई में मुँह छिपाकर सोती रही। पूछा भी नहीं कि मम्मी आप इतनी जल्दी क्यों उठ गईं? डर यह था कि पूछने पर मुझे ही कुछ काम में ना लगा दे।

करीब पाँच बजे मेरी छोटी बहन प्रियंका अपने बाजू में मम्मी को ना पाकर रोने लगी। उसका रोना सुनके मम्मी ने उसे समझाते हुए कहा- प्रियंका बेटी आज अपने यहाँ छोटा-सा मन्ना आया है।

–अनिल, पाँचवीं, साई खंडारा, बैतूल, म.प्र.

–मेहुली महापात्रा, तीसरी, दिल्ली